100 दिवसीय सुधार
100 Days Reforms

Ashish Kumar Thakur
B.A. II, History (H), Paper-IV
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur.

दो अफीम युद्धों, [प्रथम अफीम युद्ध [1839-42] एवं दूसरा अफीम युद्ध [1856-60]] ने चीन की स्वर्गीय साम्राज्य की प्रतिष्ठा को धूल में मिला दिया।

विदेशियों की सफलता को देखते हुए चीन का एक वर्ग यह मानने लगा था कि चीन को सशक्त बनाने के लिए परम्परागत संस्थाओं में परिवर्तन किया जाना आवश्यक है।

चीन में दो दल थे। एक दल सम्राट कुआंग ह्सू और और उसके मुख्य शिक्षक वेंग तुंगहो' का था। इस दल में सनयात सेन, कांग यूवी जैसे लोग थे, जो संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना करना चाहते थे। सम्राट कुआंग ह्सू 1887 में व्यस्क हो गया था एवं वह सुधारकों के प्रभाव में चीन के उत्थान के लिए पाश्चात्य शिक्षा और ज्ञान विज्ञान को अति आवश्यक मानता था।

दूसरा दल राजमाता त्स्-ह-सी और उसके समर्थकों का था जो रूढ़िवादी एवं सुधारों का विरोधी था। इन परिस्थितियों में सम्राट ने 11 जून, 1898 को सुधारों की अवश्यकता की घोषणा की। इन्हे 100 दिनों के सुधार भी कहा जाता है, जो इस प्रकार है —

(i) प्रशासन तंत्र का यूरोपीय नमूने का पुनः संगठन किया जाये।

(ii) प्रशासकीय अधिकारियों के चयन और नियुक्ति के लिए परीक्षा प्रणाली को आधुनिक बनाया जाय।

(iii) यूरोपीय विज्ञान तथा प्राचीन यूनानी साहित्य के अध्ययन के लिए एक शाही विद्यालय स्थापित किया जाय।

(iv) आधुनिक स्कूल और कॉलेज के खोले जाने का आदेश जारी किया जाय।

(v) उपयोगी पाश्चात्य ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद किए जाने का आदेश दिये।

Ashish

Scanned with CamScanner

(vi) आवागमन के आधुनिक साधनो की वृद्धि के लिए पिकिंग मे एक परिवहन एवं रवान मण्डल स्थापित करने का आदेश दिये।

(vii) यूरोपीय ढंगो से केन्द्रीय मंत्रीमंडल स्थापित किए जाने को कहा गया।

(viii) पाश्चात्य ढंग से सेना को संगठित किए जाने का आदेश दिए।

सम्राट के इन सुधारों के आदेशों का रुढ़िवादियों ने विरोध किया। उन्होने राजमाता त्सू-ह-सी का आश्रय लिया। सुधारों ने रुढ़िवादियों के दमन के लिए चिहली प्रांत के गवर्नर युआन-शिह-काई की सेना का नेतृत्व करने और राजमाता को बंदी बनाने को कहा परन्तु युआन-शिह-काई ने पासा बदल दिया और रुढ़िवादियों का समर्थन करते हुए सम्राट कुआंग-हुसु को बंदी बना लिया। सुधार समर्थकों को देश छोड़कर भाग जाना पड़ा। कई बन्दी बना लिए गये तथा मार डाले गए।

सुधारों की सफलता के विषय मे क्लाइड लिखते है - " सुधारकों के अत्यधिक उत्साह और अक्षमता के कारण सुधार की योजना असफल हुई। इसमे एक कारण सम्राट का प्रशंसनीय परन्तु मार्गभ्रष्ट उत्साह, अधिकांश अनुदार-वादियों का प्रबल विरोध तथा अंततः निष्क्रिय जनता की जड़ता थी।"

सुधार आंदोलन की असफलता के पश्चात चीन मे शासक संचालन पुनः राजमाता त्सू-ह-सी के हाथ आ गया।

सम्राट और उसके समर्थको द्वारा जारी किए गए सुधार इतिहास मे 100 दिन के सुधार के नाम से जाने जाते है।

Akhilesh